B.A Part I
Paper II

क्लासिकी और कैन्जीय मॉडलों की तुलना :-

(Comparison of classical and Keynesian models)

हम क्लासिकी और कैन्ज़ीय आय और रोजगार के सिद्धान्तों की तुलना निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर करते हैं।

(1) पूर्ण रोजगार (Full employment)- परम्परावादी यह मानते थे कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति रहती है और पूर्ण रोजगार से कम की अवस्था असाधारण समझी जाती थी। इसलिए उन्होंने इसे आवश्यक समझा ही नहीं कि रोजगार का कोई विशेष सिद्धान्त अलग से बनाया जाए। दूसरी ओर, केन्ज़ यह मानता है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार का होना एक विशेष स्थिति है। उसने रोजगार का एक सामान्य सिद्धान्त प्रस्तुत किया जो प्रत्येक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पर लागू होता है।

(2) से का नियम (Say's Law)- क्लासिकी विश्लेषण 'से' के इस मार्केट-नियम पर आधारित था कि 'पूर्ति स्वयं अपनी मांग पैदा कर लेती है'। इस प्रकार, परम्परावादियों ने अति-उत्पादन की संभावना ही खत्म कर दी। प्रो० स्वीजी (Sweezy) के अनुसार, "केन्ज़ की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उसने आंग्ल-अमरीकी अर्थशास्त्र को इस क्रूर सिद्धान्त से मुक्ति दिलाई।" केन्ज़ ने इसके विपरीत मत की स्थापना की कि मांग स्वयं अपनी पूर्ति पैदा करती है। प्रभावी मांग की न्यूनता के परिणामस्वरूप बेरोजगारी आती है क्योंकि लोग अपनी समस्त आय को उपभोग पर खर्च नहीं करते। इस प्रकार, आर्थिक सिद्धान्त में केन्ज़ का क्रान्तिकारी योगदान यह है कि उसने प्रभावी मांग तथा उपभोग फलन के नियमों का विकास किया।

(3) अबंध नीति (Laissez Faire)- क्लासिकी अर्थशास्त्र स्वयं समायोजित (adjusting) आर्थिक व्यवस्था की अबन्ध नीति पर आधारित था जिसमें सरकार का कोई दखल नहीं होता। केन्ज़ ने अबंध नीति छोड़ दिया क्योंकि उसका विश्वास था कि प्रबुद्ध स्वार्थ (enlightened self-interest) सदैव सार्वजनिक हित को लेकर नहीं चलता और इसी नीति के परिणामस्वरूप -स्वरूप 'बड़ी-मन्दी' आयी थी। इसलिए वह राज्य द्वारा हस्तक्षेप के पक्ष में था और "उसने भी निजी निवेश की कमी से उत्पन्न अन्तर को भरने के लिए

Scanned by CamScanner

सार्वजनिक निवेश के महत्त्व पर बल दिया। प्रो० डिल्लर्ड (Dillard) के अनुसार, केन्ज के सिद्धान्त की क्रांतिकारी पद्धति प्रकृति अबंध्य नीति की मान्यता को नकारना था।

(4) मजदूरी कटौती (Wage cut) - प्रमुख क्लासिकी अर्थशास्त्रियों में से पीगू ने बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए मजदूरी में कटौती की नीति का समर्थन किया था। परन्तु ~~केन्ज~~ ने केन्ज ने सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों दृष्टि से इस प्रकार की नीति का विरोध किया। सैद्धान्तिक दृष्टि से, मजदूरी में कटौती की नीति बेरोजगारी को दूर करने में की बजाय बढ़ाती है। व्यावहारिक दृष्टि से, श्रमिक मुद्रा-मजदूरी में कटौती स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। इसलिए अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर बढ़ाने के लिए केन्ज ने लचीली मजदूरी नीति की तुलना में लचीली मुद्रा-नीति का अनुमोदन किया। प्रो० हैरिस (Harris), केन्ज के मजदूरी और रोजगार के मतों को क्रांतिकारी मानता है।

(5) बचत (Saving) - परम्परावादी बचत तथा मितव्ययिता (Thrift) पर बल देते थे क्योंकि वे मानते थे कि इससे आर्थिक वृद्धि के लिए पूंजी-निर्माण होता है। केन्ज़ की दृष्टि में बचत एक निजी गुण तथा सार्वजनिक दोष है। कुल बचत में वृद्धि होने से कुल उपभोग तथा मांग घट जाती है जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर गिर जाता है। इस प्रकार, केन्ज ने बेरोजगारी दूर करने के लिए सार्वजनिक बचत की बजाय सार्वजनिक व्यय का अनुमोदन किया। उसने इस तरह 'बुर्जुआ तर्क के अन्तिम स्तंभ को भी खण्ड-खण्ड कर दिया कि आसमान आय के परिणामस्वरूप बचत बढ़ती है और वृद्धि के लिए पूंजी-निर्माण होता है। यह एक क्रांतिकारी विचार था।

(6) बचत-निवेश समानता (Saving-Investment Equality) - क्लासिकी अर्थशास्त्री यह मानते थे कि बचत व निवेश हमेशा समान रहते हैं। यदि किसी स्थिति में निवेश से बचत बढ़ जाती है तो यह समानता ब्याज दर द्वारा लाई जाती है। लेकिन केन्ज़ इस विचारधारा से सहमत नहीं था। उसके अनुसार, बचत-निवेश समानता ब्याज दर द्वारा नहीं बल्कि आय में परिवर्तन द्वारा लाई जा सकती है। वास्तव में, निवेश ब्याज दर द्वारा नहीं अपितु पूंजी की सीमान्त उत्पादकता द्वारा निर्धारित होता है।

Scanned by CamScanner

(7) व्यापार चक्र (Trade cycles) - क्लासिकी अर्थशास्त्री व्यापार चक्रों की कोई समुचित व्याख्या नहीं प्रस्तुत कर पाए। वे व्यापार चक्रों के मोड़ बिन्दुओं (turning points) का संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं कर सके और सामान्य रूप से तेजी तथा मंदी की बात करते रहे। व्यापार चक्र विश्लेषण में केन्ज़ का वास्तविक योगदान यह है कि उसने चक्रों के मोड़ बिन्दुओं के संबंध में अपनी व्याख्या दी और मनोवृत्ति में परिवर्तन किया कि चक्र पर नियंत्रण करने के लिए सरकार क्या करे और क्या न करे। जोन राबिन्सन (Joan Robinson) के अनुसार, इस क्षेत्र में केन्ज़ीय क्रांति आगे है (Keynesian Revolution Commands the Field)।

(8) मुद्रा सिद्धान्त (Monetary Theory) - परम्परावादियों ने कृत्रिम रूप से मुद्रा सिद्धान्त से पृथक कर दिया था। दूसरी ओर, केन्ज़ ने मुद्रा सिद्धान्त तथा मूल्य सिद्धान्त का एकीकरण किया। उसने ब्याज दर सिद्धान्त को भी मुद्रा सिद्धान्त के क्षेत्र में ला दिया। वह ब्याज की दर को शुद्ध रूप से एक मौद्रिक तत्त्व मानता है। उसने मुद्रा के लिए मांग को परिसंपत्ति के रूप में ग्रहण किया और अल्पकाल में ब्याज की दर के निर्धारण की व्यवस्था करने के लिए उसे लेन-देन मांग, सतर्कता मांग तथा सट्टा मांग में विभक्त किया। केन्ज़ ने उत्पादन के सिद्धान्त के लिए माध्यम से मूल्य सिद्धान्त तथा मुद्रा सिद्धान्त का एकीकरण करके मुद्रा को अतटस्थ बना दिया, जो मुद्रा के तटस्थता विषयक क्लासिकी विचार के विपरीत था। इसे प्रो० जोनसन (Johnson) क्रांतिकारी मानता है।

(9) मुद्रा की तटस्थता (Neutrality of Money) - क्लासिकी अर्थशास्त्री मुद्रा की तटस्थता की धारणा को मानते थे। सामान्य कीमत स्तर का निर्धारण उस स्तर पर होगा जहां वस्तुओं और सेवाओं का किनी विनिमय होगा। लेकिन केन्ज़ ने इसे अलग स्थितियों में लिया। प्रथम स्थिति में, उसने पूर्ण रोजगार की स्थिति को लिया, जबकि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि से कीमत स्तर में आनुपातिक वृद्धि हो परन्तु उत्पादन इस स्तर पर स्थिर रहे। दूसरी विशेष स्थिति में, अर्थव्यवस्था में तरलता अधिमान हो और अर्थव्यवस्था में ब्याज की दर और ज्यादा न घटे जबकि अर्थव्यवस्था में मुद्रा-पूर्ति को बढ़ाया जा रहा हो।

(10) समष्टि विश्लेषण (Macro Analysis) - क्लासिकी अर्थशास्त्र एक व्यष्टि विश्लेषण था जिसे उन्होंने सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर लागू करने का प्रयत्न किया। दूसरी ओर, केन्ज़ ने आर्थिक समस्याओं के प्रति समष्टि मार्ग अपनाया। केन्ज़ीय क्रांति कुल आय, रोजगार, उत्पादन, उपभोग, मांग, पूर्ति, बचत तथा निवेश का समष्टिगत प्रावैगिक (macro-dynamic) दृष्टिकोण अपनाने की है। जैसा प्रो०

Scanned by CamScanner

हैन्सन ने कहा है, "सामान्य सिद्धान्त ने हमें अर्थशास्त्र को स्थैतिक की अपेक्षा प्रावैगिक रूप में ग्रहण करने में सहायता दी है"।

(11) पूंजीवाद को बचाना (Saving capitalism) - केन्ज़ का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान पूंजीवाद को उस संकट से बचाना है जिसमें वह 1930 के दशक में फंसा था। केन्ज़ के अनुसार, "क्लासिकी विचारधारा का कुच्छ स्वच्छ पूंजीवाद इसलिए कार्य नहीं कर सका क्योंकि यह समझदार नहीं है, यह सुन्दर नहीं है, यह न्यायोचित नहीं है, यह उत्तम नहीं है और यह ठीक ढंग से काम नहीं करता है।" केन्ज़ ने राज्य हस्तक्षेप की आवश्यकता का समर्थन करके पूंजीवाद को सुधारा जिससे समस्त मांग और रोजगार को बढ़ाया जाए और इस प्रकार इसे साम्यवाद की ओर जाने से बचाया। प्रो॰ गॉलब्रेथ (Galbraith) के अनुसार "इस दृष्टिकोण से केन्ज़ बहुत सफल था क्योंकि इससे मार्क्सवाद का विकसित देशों में बढ़ना रुक गया।"

(12) नीतियाँ (Policies) - क्योंकि क्लासिकी अर्थशास्त्री अबन्ध नीति के समर्थक थे, इसलिए उन्हें राजकोषीय नीति अथवा मौद्रिक नीति में कोई विश्वास नहीं था। वे संतुलित बजट नीति में विश्वास रखते थे। इसके विपरीत, केन्ज़ ने क्रमशः सस्ती मुद्रा तथा मंहगी मुद्रा के साथ-साथ अवस्फीति के दौरान घाटे के बजटों और स्फीति के दौरान बेशी (surplus) बजटों के महत्त्व पर बल दिया। इस प्रकार वह एक व्यावहारिक अर्थशास्त्री था जिसके "मॉडल स्फीतिकारी तथा अवस्फीतिकारी घटनाओं और समृद्ध तथा मंदी की अर्थव्यवस्थाओं को स्पष्ट करते हैं।" फिर, क्लासिकी अर्थशास्त्री सार्वजनिक वित्त को पूर्ण रोजगार के लिए बाधा मानते थे। अतः उन्होंने सार्वजनिक वित्त के कार्यक्षेत्र को सीमित रखा। उनके अनुसार, सार्वजनिक वित्त में सरकार का कार्य अधिक रहता है और अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता सीमित हो जाती है। पूर्ण प्रतियोगिता न रहने के कारण बेकारी बढ़ जाती है। लेकिन केन्ज़ ने क्लासिकी विचारधारा का विरोध किया। उसके अनुसार, आर्थिक क्रियाओं को नियन्त्रित करने के लिए और स्फीति या अवस्फीति एवं बेरोजगारी की स्थितियों में राजकोषीय नीतियों का विशेष महत्त्व है। फिर की सभी पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं ने केन्ज़ के नीति उपायों को अपना लिया।

निष्कर्ष रूप में, हम यह कह सकते हैं कि General Theory उद्विकासी नहीं है बल्कि आर्थिक विचार तथा नीति दोनों ही दृष्टियों से क्रान्तिकारी है और क्लासिकी विचारधारा से यथार्थतः भिन्न है।

Scanned by CamScanner